Imp

प्रवचन

परमहंस श्री हंसानंद जी सरस्वती दण्डी स्वामी जी

विषय तालिका

CD # 29 * SEP 2009 *

SN	Title	Min	Coding			Contents	
1	Sep 29.mp3	*45*				२ पदार्थ हैं, आत्मा-दृष्टा,अकर्म,ज्ञान,सुख एवं अनात्मा-दृश्य,सकर्म,अज्ञान दुःखरूप, आत्मा ही ब्रह्म है	Imp
2	Sep 30.mp3	*45*				आत्मा सत्-चित-आनंद स्वरूप है, जीव-ईश्वर अभेद दर्शन ही यथार्थ ज्ञान है, आत्मा दृष्टा मात्र है	TM
3	Sep 31.mp3	*37*				विस्तार में सृष्टि क्रम, ईश्वर ज्ञानदाता अज्ञान साभास बुद्धि में है, चिदाभास की ७ अवस्थाऐं	Imp
4	Sep 32.mp3	*33*				आत्मा व माया २ ही पदार्थ हैं स्थित प्रज्ञ के लक्षण/साधन - शम दम उपरम व आत्म चिन्तन	Imp
5	Sep 33.mp3	*53*				नित्यसुख - मैं सच्चि०ही हूँ - नि०नि०, अकर्म जीव तरंग की भाँति जल रूपी ब्रह्म से अभिन्न है	Imp
6	Sep 34.mp3	*43*				अर्जुन सुख स्वरूप मैं सच्चि०ही हूँ, वही तू है, मुझ चिदाकाश में माया मेघ की जा० स्व० बरसात है	Imp
7	Sep 35.mp3	56				दृग-असंग चिदरूप अकर्म दृष्टा आत्मा एवं दृश्य सकर्म जड़ माया, दो ही पदार्थ है	**
8	Sep 36.mp3	27				मोह निशा सब सोवन हारा,देखे स्वप्न अनेक प्रकारा सच्चि०स्वरूप में जागो, जगत सपना है	**
9	Sep 37.mp3	*52*				आत्मा दृष्टा अकर्म है सभी कर्म प्रकृति में हैं आत्मा ही सच्चि०परमात्मा है, वही तू है, ४-प्रलय	Imp
10	Sep 38.mp3	28				भगवान और संसार दोनों उदार हैं भ० सुख अमरता ज्ञान देने में और जगत दुःख मृत्यु अज्ञान देने में	*
11	Sep 39.mp3	55				अर्जुन तेरा स्वरूप सच्चि० आत्मा है माया रचित शरीर ही जन्म-मरण वाले दुःख रूप है	*
12	Sep 40.mp3	30				आत्मा सच्चि० है और द्वैत संसार माया है जीव भी देह नहीं वरन सच्चि०ही है-ये ही ज्ञान है	**
13	Sep 41.mp3	*67*				सभी कर्म प्रकृति में हैं, सच्चि० स्वरूप आत्मा दृष्टा, अकर्म व असंग है यही यथार्थ ज्ञान है	Imp
14	Sep 42.mp3	30				गी०३/१-१२: दो निष्ठाए कर्म-भक्ति एवं ज्ञानयोग, निष्काम कर्मयोग की महिमा, प्रकृति में कर्म अनिवार्य है	**
15	Sep 43.mp3	*44*				गी०५/१४-१६: आत्मा-अनात्मा, सत्-असत्, क्षेत्रज्ञ-क्षेत्र, ब्रह्म-माया २ ही पदार्थ हैं, दृष्टा-दृश्य ववेक	**
16	Sep 44.mp3	31				सकाम कर्म से दुःख रूप संसार मिलता है एवं नि० कर्म से भगवान निद्रा कारण व स्व०जा० कार्य हैं	**
17	Sep 45.mp3	*43*				गी०५/१४-१६: देही-देह दो ही पदार्थ हैं, देही अकर्ता असंग साक्षी आत्मा एवं देह जड़ अकर्म माया है	**
18	Sep 46.mp3	36				गी०३/१०-१५: दो निष्ठाए हैं कर्म-भक्ति एवं ज्ञानयोग, यज्ञ कर्म की महिमा - यज्ञ कर्म अनिवार्य है	**
19	Sep 47.mp3	*44*				गी०५/१५-२६: इति, अज्ञान से जीव का सच्चि० स्वरूप आवृत है, ज्ञान से परमात्मा प्रकाशित हो जाता है	**
20	Sep 48.mp3	32				गी०३/१४-१७: अन्न चक्र - भूतप्राणी अन्न-मेघ-यज्ञ से उत्पन्न होते हैं - सभी ब्रह्म है, वही मैं हूं, यही ज्ञान है	**
21	Sep 49.mp3	*45*				गी०५/२६: भगवान ही माया से विश्वरूप धरते व उसमें जीवरूप से प्रवेश करते हैं, इस ज्ञान से ही मुक्ति है	**
22	Sep 50.mp3	28				संसार असत जड़ दुःख रूप है आत्मा ही सुख सिंधु है, आत्म ज्ञान ही मुक्तिप्रद है	**